[यीशु के दृष्टान्त]
विश्वासयोग्य दास और दुष्ट दास

मत्ती 24:45-51 और लूका 12:42-48 में "विश्वासयोग्य दास और दुष्ट दास" का दृष्टान्त परमेश्वर के राज्य में सेवा के बारे में बताते हैं।

पढ़ें मत्ती 24:45-51 और लूका 12:42-48 ।

---

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?
ध्यान दें।

दासों का सरदार। कई सेवकों या दासों का स्वामी एक लम्बी यात्रा पर निकलता है। जाने से पहले, वह अपने सबसे विश्वासयोग्य दास को अन्य दासों के ऊपर सरदार या प्रबंधक ठहराता है। नए नियुक्त प्रबंधक के रूप में, यह दास न केवल अन्य दासों के काम की देखरेख करता है, बल्कि इस बात का भी विशेष रूप से ध्यान रखता है कि उन्हें किसी चीज़ की कमी न हो। जब दासों की देख-रेख करने वाला कोई प्रबंधक या सरदार नहीं होता है, तो उनके लिए अपने काम को ईमानदारी या प्रतिष्ठित रूप से करना बहुत मुश्किल होता है।

स्वामी का वापस लौटना। ऐसा एकदम अचानक होता है। न केवल दिन बल्कि सटीक घंटे भी पूरी तरह से अज्ञात है! एक प्रबंधक के रूप में कार्य करने वाले दास को या तो विश्वासयोग्य या दुष्ट दास के रूप में चित्रित किया जाता है। दुष्ट दास की तुलना में विश्वासयोग्य दास के ऊपर स्वामी की वापसी का पूरी तरह से अलग प्रभाव पड़ेगा।

विश्वासयोग्य दास की प्रशंसा। यदि प्रबंधक के रूप में अपनी क्षमता के अनुसार यह दास अपने कार्य में विश्वासयोग्य रहता है और अपने स्वामी की इच्छा को पूरा करने के लिए उत्सुक रहता है, तो स्वामी वापस लौटने पर उसे अपनी सारी संपत्ति का अधिकारी बना देगा। अपने स्वामी के वापस लौट आने तक यह दास हर समय अपने मालिक की इच्छा को पूरा कर रहा है और पूरी विश्वासयोग्यता से अपने स्वामी के अन्य सेवकों की अच्छे से देखभाल भी कर रहा है।

दुष्ट दास के लिए दण्ड। हालाँकि, यदि प्रबंधक के रूप में अपनी क्षमता से यह दास अपने कार्य में विश्वासयोग्य नहीं रहता, तो वह दण्ड का भागी होगा। उसने जानबूझकर अपने मन में विचार किया कि वह लापरवाही से अपने काम को करेगा जैसा कि वह करता आ रहा था। उसने सोचा कि, क्योंकि उसके स्वामी को लौटने में बहुत समय लगेगा, इसलिए उसने समय को मौज-मस्ती में बिताया। उसने सिर्फ मौज-मस्ती ही नहीं की। बल्कि उसने अन्य सेवकों की पीड़ा को भी बढ़ाया। उसने अपने कार्य के भार को अन्य सेवकों में बाँट दिया और उन्हें पीटने लगा, कि वे उससे डरकर उसके अधीन रहकर कार्य करें। और उसने पियक्कड़ों के साथ खाने-पीने और मौज-मस्ती में अपना समय बिताया।

अपने वापस आने पर स्वामी उस दुष्ट दास का भाग (Greek: dichotomeó) कपटियों के संग ठहराएगा और उसे कठोर दण्ड देगा, ताकि इस बात को स्मरण रखा जाये कि स्वामी उन दासों के साथ कैसा व्यवहार करता है जो अपने कार्य में विश्वासयोग्य नहीं रहते। उसके स्वामी ने उसे अविश्वासियों के साथ उस कष्टदायी स्थान पर रखा जहाँ अशान्ति, रोना और दांत पीसना होगा। क्योंकि उस दास ने अपने स्वामी के भरोसे को तोड़ा था और यह उसके स्वामी को स्वीकार्य नहीं था, इसलिए उसके स्वामी ने उसे नरक में डाल दिया (प्रकाशितवाक्य यह21:8; मत्ती 25:46 से तुलना करें)।

---

2. सन्दर्भ की जांच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

खोज व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका 12:35-41 में पायी जाती है।

यीशु ने इन पदों में सदा तैयार रहो वाले दृष्टान्त को बताया। तब पतरस ने पूछा, "हे प्रभु, क्या यह दृष्टान्त तू हम ही से या सबसे कहता है?" पतरस यह जानने के लिए बहुत ही उत्सुक है। लेकिन यीशु ने उसे इसका सीधा उत्तर नहीं दिया। और यह बात लूका 13:23-24 में फिर से होती है। शायद यीशु ने यह कहा होगा, "कभी भी भली जिज्ञासा से उत्पन्न होने वाले सवालों को पूछने में हिचकिचाना नहीं चाहिए। आपको ऐसा क्या करना चाहिए कि आप एक विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास होने के लिए मेहनत करें, और सौंपें गए कार्य को पूरा करने के लिए उसका प्रबंधन अच्छे से करें।" यह समझाने के लिए कि इन बातों का क्या अर्थ है, यीशु ने अन्य दासों के प्रबंधक के रूप में, विश्वासयोग्य या दुष्ट दास के दृष्टान्त को बताया।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 12:42-46 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और अनुप्रयोग लूका 12:47-48 में दिया गया है।

इसमें लिखा है, "वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता है और तैयार नहीं रहता ओर उसकी इच्छा के अनुसार नहीं चलता, वह बहुत मार खायेगा। लेकिन, जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे, वह थोड़ी मार खाएगा। इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत लिया जाएगा।" स्वामी की वापसी पर, वह अपने दासों या प्रबंधकों का उनके निर्धारित कार्य के अनुसार उनका पूर्ण न्याय करेगा। वह विश्वासयोग्य दासों को पुरस्कृत करेगा (लूका 19:17,19), लेकिन वह दुष्ट दासों को दंडित करेगा (लूका 12:47-48)। हालाँकि कुछ दासों को कम दंडित किया जाएगा, क्योंकि वे स्वामी की इच्छा को नहीं जानते थे, फिर भी उन्होंने सजा के लायक काम किये। अन्य दासों को कड़ी सजा दी जाएगी क्योंकि वे न केवल स्वामी की इच्छा को जानते थे बल्कि उसे परिभाषित भी करते थे और उन्होंने सजा के योग्य कार्य किये।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

सिखाएँ। यीशु ने किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं दिया।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहिचानना।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 24:45-51 और लूका 12:42-46 में "विश्वासयोग्य दास और दुष्ट दास" का दृष्टान्त परमेश्वर के राज्य में सेवा के बारे में बताते हैं।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "मसीहियों को जानबूझकर गैर-ज़िम्मेदारी से कार्य नहीं करने चाहिए और न ही उन्हें वही कार्य करने चाहिए जो उन्हें अपने जीवन में करने पसंद है। उन्हें जानबूझकर ज़िम्मेदारी के साथ काम करना चाहिए, अपने परमेश्वर द्वारा दिए गए कार्यों को गंभीरता से लेना चाहिए और लोगों, गतिविधियों, समय, अवसरों आदि के प्रति विश्वासयोग्य और बुद्धिमान प्रबंधक बनने की कोशिश करनी चाहिए, जो परमेश्वर ने उन्हें सौंपा है।" परमेश्वर प्रत्येक मसीही दास को अपने द्वारा सौंपे गए कार्यों के लिए ज़िम्मेदार और उत्तरदायी ठहराएगा।

सेवा परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग ईमानदारी से अपने परमेश्वर द्वारा सौंपे गए कार्यों के प्रति क्रियान्वित रहते हैं।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिए समान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के प्रत्येक गद्यांशों में से जो कुछ भी पढ़ाया जाता है, उसकी तुलना में विश्वासयोग्य दास और दुष्ट दास का दृष्टान्त क्या सिखाता है?

(1) दास और उसका कार्य।

प्रत्येक दास को एक निर्धारित कार्य सौंपा जाता है। मरकुस 13:34 में लिखा है, "यह उस मनुष्य की दशा है, जो परदेश जाते समय अपना घर छोड़ जाए, और अपने दासों को अधिकार दे : और हर एक को उसका काम जाता दे।"

प्रत्येक दास को विश्वासयोग्य बने रहना चाहिए। 1 कुरिन्थियों 4:1-2 में लिखा है, "मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझें। फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि विश्वासयोग्य निकले।"

कोई भी दास नहीं जानता कि उसका स्वामी कब वापस आएगा और उसकी सेवा का मूल्याँकन करेगा। मरकुस 13:31-33, 35 में लिखा है, "आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। उस दिन या उस समय के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र (अपनी मानवीय देह में); परन्तु केवल पिता। देखो, जागते ओर प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा। इसलिए, जागते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, साँझ को या आधी रात को, या मुर्गे के बांग देने के समय या भोर को।"

(2) दास और उत्तरदायित्व

दास का उत्तरदायित्व उसको सौंपे गए कामों पर निर्भर करता है। यह इस बात का अनुपात है कि उसके पास कितना ज्ञान है और उसने अपने अवसरों के साथ क्या किया।

पढ़ें लैव्यव्यवस्था 26:1-46 आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता।
परमेश्वर आज्ञाकारियों को पुरस्कृत करेगा और अनाज्ञाकारियों को दण्ड देगा।

पढ़ें गिनती 15:22-31; भजन संहिता 19:12-13 । अनजाने में या उपेक्षा-पूर्ण अनाज्ञाकारिता।
अनजाने में किए गए पापों का प्रायश्चित करना चाहिए, लेकिन जानबूझकर और उपेक्षा-पूर्ण पापों को गंभीर रूप से दंडित किया जाएगा। मसीहियों को प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर उन्हें इच्छापूर्ण पापों से दूर रखें। वे अपने छिपे हुए दोषों और त्रुटियों की क्षमा के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।

पढ़ें लूका 12:47-48; 23:34; प्रेरितों के काम 3:17; 1 तीमुथियुस 1:13 । अज्ञानता या ज्ञान और अनाज्ञाकारिता।
परमेश्वर की इच्छा के बारे में दास कितना जानता था, उसके अनुसार उसे और उसकी अनाज्ञाकारिता को दंडित किया जाएगा। संक्षेप में, "इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जायेगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत लिया जायेगा" (लूका 12:48ब)।

पढ़ें आमोस 3:2; मत्ती 10:15; 11:20-24 । ईश्वरीय चुनाव कभी भी मानवीय ज़िम्मेदारी से अलग नहीं हो सकता है।
इस्राएल को भी, जिसे परमेश्वर ने पृथ्वी के सभी परिवारों में से अपने विशेष लोगों के रूप में चुना था, उसके सभी पापों के लिए दंडित किया जाएगा। जिन शहरों ने यीशु मसीह की उपस्थिति, उपदेश और आश्चर्यकर्मों का अनुभव किया, लेकिन पश्चाताप नहीं किया, वे दुष्ट शहरों की तुलना में अधिक गंभीर रूप से दंडित होंगे, जिन्होंने ऐसे विशेषाधिकारों का अनुभव नहीं किया है।

(3) दास और अनाज्ञाकारिता`

उस दास को, जो अपने स्वामी की इच्छा को नहीं जानता, उसे दंडित क्यों किया जाना चाहिए?
पढ़ें रोमियों 1:18-21; 2:14-16 । अज्ञान कभी भी निरंकुश नहीं होता है! कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि उसे परमेश्वर या परमेश्वर की इच्छा का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि पर अपने अस्तित्व और सामर्थ्य और उसने सभी मनुष्यों के हृदय और विवेक में अपनी नैतिक इच्छा शक्ति (अच्छाई और बुराई) को प्रगट किया है। परमेश्वर लोगों का उनके ज्ञान और व्यवहार के अनुसार पूर्ण न्याय करेगा।

पढ़ें यूहन्ना 3:16-18,36; रोमियों 8:1; 1 कुरिन्थियों 3:14; सभोपदेशक 12:14; याकूब 2:14-17; गिनती 16:1-35; 3 यूहन्ना 9 । उद्धार का आधार विश्वास है। परमेश्वर सभी लोगों का न्याय अपने ऊपर विश्वास और संदेश ओर स्वयं पर अविश्वास के अनुसार करेगा। मसीहियों का न्याय, उनके अच्छे कामों, व्यवस्था को बनाए रखने, और धार्मिक (अपने धार्मिक कर्तव्यों को निभाने से) होकर रहने के द्वारा नहीं होगा, बल्कि केवल यीशु मसीह और उद्धार के उसके सम्पूर्ण कार्यों पर विश्वास करने के अनुसार होगा। लेकिन अंतिम न्याय का आधार कार्य है। लोगों द्वारा धार्मिकता के साथ जीवन को व्यतीत करने के द्वारा विश्वास का जीवन दर्शाया जाता है। मसीहियों को उनके धार्मिक कार्यों के अनुसार पुरस्कृत किया जाएगा।

इसी तरह, दूसरे दिखाते हैं कि वे कैसे अधर्म में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। परमेश्वर के लोगों के बीच हमेशा से दुष्ट प्रबंधक रहे हैं, जैसे लेवी दातान और उसके सहयोगी, या कलीसिया का अगुवा दियुत्रिफेस की तरह, जो उनमें बड़ा बनना चाहता था, जिसका प्रेरित यूहन्ना और परमेश्वर के सहकर्मियों से कुछ लेना-देना नहीं था ओर उसने उनका विरोध किया। वे परमेश्वर के न्याय से नहीं बचेंगे।

(4) दास और दूसरा आगमन

मसीही दास अपने स्वामी के आगमन से किस प्रकार सम्बन्धित हैं?

पढ़ें 1थिस्सलुनीकियों 5:1-3। यीशु मसीह का दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा। कोई भी मनुष्य उस क्षणिक घटना से बच नहीं पाएगा!

पढ़ें 2थिस्सलुनीकियों 2:1-2; 3:6-12। मसीहियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन का इंतज़ार करते समय घबराना नहीं चाहिए, जैसा कि थिस्सलुनीके के लोगों ने किया।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 3:14-22। मसीहियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन का इंतजार करते समय गुनगुना नहीं रहना चाहिए जैसा कि लौदीकिया के लोगों ने किया था।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 2:8-11 मसीहियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन का इंतजार विश्वासयोग्य और स्थिर रहकर करना चाहिए, जैसा कि स्मुरना के लोगों ने किया। दूसरे आगमन का इंतज़ार करने का एकमात्र सही तरीका यह है कि हम यीशु मसीह की ईमानदारी से सेवा करते रहें!

---

6. बाइबल में सेवा का सारांश।

परिशिष्ट 17 देखें।
